मादा के भेष में नर

डॉ. अरविन्द गुप्ते

पुराने ज़माने की एक कहानी है। एक सुल्तान के हरम में सैकड़ों बीवियां थीं। ज़ाहिर है, सुल्तान केवल कुछ चुनिंदा बीवियों को ही समय दे पाता था। शेष बीवियों ने अपने पुरुष मित्रों को बुरके पहना कर हरम में छुपा रखा था। बुरके में होने के कारण किसी को यह शक नहीं होता था कि वे स्त्रियों के भेष में पुरुष हैं। एक दिन सुल्तान को कुछ शक हो गया और उसने सिंहासन पर बैठकर हरम की सब महिलाओं की पहचान करना शुरू कर दिया। वह हर 'बुरके वाली' को अपने सामने बुला कर बुरका खुलवा कर देखता था। फिर क्या था! हरम में छुपे पुरुषों में हड़कम्प मच गया, किंतु उनकी किस्मत अच्छी थी। शिनाख्त परेड शुरू होने के कुछ क्षणों बाद ही भूकम्प का एक ज़ोरदार झटका आया और सुल्तान अपने सिंहासन से गिर पड़ा। भगदड़ का फायदा उठा कर सारे बुरकाधारी पुरुष भाग निकले।

यह कहानी तो पुराने ज़माने की है, किंतु कुछ इस तरह की घटना पक्षी जगत में पाई जाती है। युरोप और पश्चिम एशिया में पाए जाने वाले *वेस्टर्न मार्श हॅरियर* नामक बाज़ में

सामान्यतः नर और मादा अलग-अलग रंगों के होते हैं। नर का रंग भूरा (राख के समान) होता है और आंखे पीले रंग की होती हैं। मादा का रंग कत्थई होता है, उसके सिर और कंधों पर सफेद रंग होता है और आंखें कत्थई रंग की होती हैं। मादा का आकार भी नर से कुछ बड़ा होता है। नर बाज़ अपने घोंसले की रखवाली बड़ी मुस्तैदी से करता है और घोंसले के 700 मीटर के दायरे में किसी अन्य नर को आने नहीं देता।

किंतु सभी नर रंग-रूप के इस नियम का पालन नहीं करते। लगभग चालीस प्रतिशत नरों का रंग प्रमुख रूप से कत्थई होता है जिसके कारण वे दूर से देखने पर मादा के समान दिखाई देते हैं। किंतु उनकी आंखें पीले रंग की ही होती हैं और आकार भी अन्य नरों के समान अपेक्षाकृत छोटा होता है।

सवाल यह उठता है कि ये नर, मादा के समान क्यों दिखाई देते हैं? फ्रांस के वैज्ञानिक ऑड्री स्टर्नलास्की और स्पेन के वैज्ञानिक फ्रांस्वा मूजो मिलकर इस सवाल का जवाब खोजने का प्रयास कर रहे हैं। उन्होंने अनुमान लगाया कि मादा के समान दिखने वाले नरों पर अन्य नरों द्वारा हमला किए जाने की संभावना कम होती होगी और इस तरह छद्म भेष वाले नर को अनावश्यक रूप से लड़ाई के पचड़े में नहीं पड़ना पड़ता होगा।

इस परिकल्पना को जांचने के लिए उन्होंने प्रजनन कर रहे बाज़ों के 36 जोड़ों का अवलोकन किया। उन्होंने यह देखने की कोशिश की कि ये प्रजनन कर रहे बाज़ कुछ बनावटी बाज़ों पर कैसी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इन बनावटी बज़ों में कुछ नर के समान दिखाई देते थे, कुछ मादा के समान और कुछ छद्मवेशधारी नरों के समान (नर होने के बवजूद मादा के समान) दिखते थे। जैसी कि उम्मीद थी, घोंसले की रखवाली करने वाले नर बाज़ों ने बनावटी नर पक्षियों पर सबसे अधिक हमले किए जबकि बनावटी

मादाओं तथा छद्मवेशधारी नरों पर कम हमले किए। चूंकि असली मादाएं घोंसले की सुरक्षा में कोई रुचि नहीं लेतीं, उन्होंने नकली पक्षियों पर कोई हमले नहीं किए।

अतः ऐसा लगता है कि छद्मवेशधारी नरों के अन्य नरों से बचने की संभावना अधिक होती है। किंतु इस प्रयोग के दौरान दो रोचक बातें सामने आईं। घोंसले की रक्षा करने वाले छद्मवेशधारी नर केवल मादा की तरह दिखते ही नहीं, कुछ-कुछ वैसा व्यवहार भी करते हैं। अध्ययन के दौरान वे बनावटी नरों की तुलना में बनावटी मादाओं पर अधिक हमले कर रहे थे, जबकि उन्हें मादाओं का स्वागत करना चाहिए था। एक मादा ही दूसरी मादा को खतरा मान कर उस पर हमला करती है।

दूसरी रोचक बात यह सामने आई कि जब कोई परभक्षी पक्षी घोंसले के पास (अंडों या बच्चों को खाने के लिए) आता था तब छद्मवेशधारी नर झुण्ड बनाकर उसे भगाने का प्रयास करते थे जबकि सामान्य रूप वाले नर ऐसा करने में कोई रुचि नहीं लेते थे। इन सब अवलोकनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि असली फायदा सामान्य रूप वाले नरों को होता है क्योंकि उनके घोंसलों के आसपास डरपोक छद्मवेशधारी नरों के घोंसले होते हैं जिनसे कोई खतरा तो नहीं होता, उल्टे वे परभक्षियों को भगाने का काम करते रहते हैं।

मूजो का कहना है कि मादा के समान दिखने में इन नरों को कुछ फायदा तो ज़रूर होता होगा वरना वे जीवन के संघर्ष के कारण लुप्त हो जाते, किंतु अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह फायदा क्या है। ***(स्रोत फीचर्स)***